PROCEDURES OF CURRICULUM CONSTRUCTION
पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया

MEANING → पाठ्यक्रम निर्माण शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु एक आवश्यक सोपान है। पाठ्यक्रम के निर्माण के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उस पाठ्यक्रम के उद्देश्य विषय-वस्तु, अधिगम अनुभव व मूल्यांकन प्रक्रिया का निर्धारण किया जाये। पाठ्यक्रम निर्माण का अर्थ निरंतर चलने वाली प्रक्रिया से है, जो कभी समाप्त नहीं होती पाठ्यक्रम का मुख्य लक्ष्य छात्रों का विकास करना है। इसलिए पाठ्यक्रम का प्रारूप ऐसा हो, जिससे छात्रों के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन किया जा सके।

पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया चक्रीय होती है।

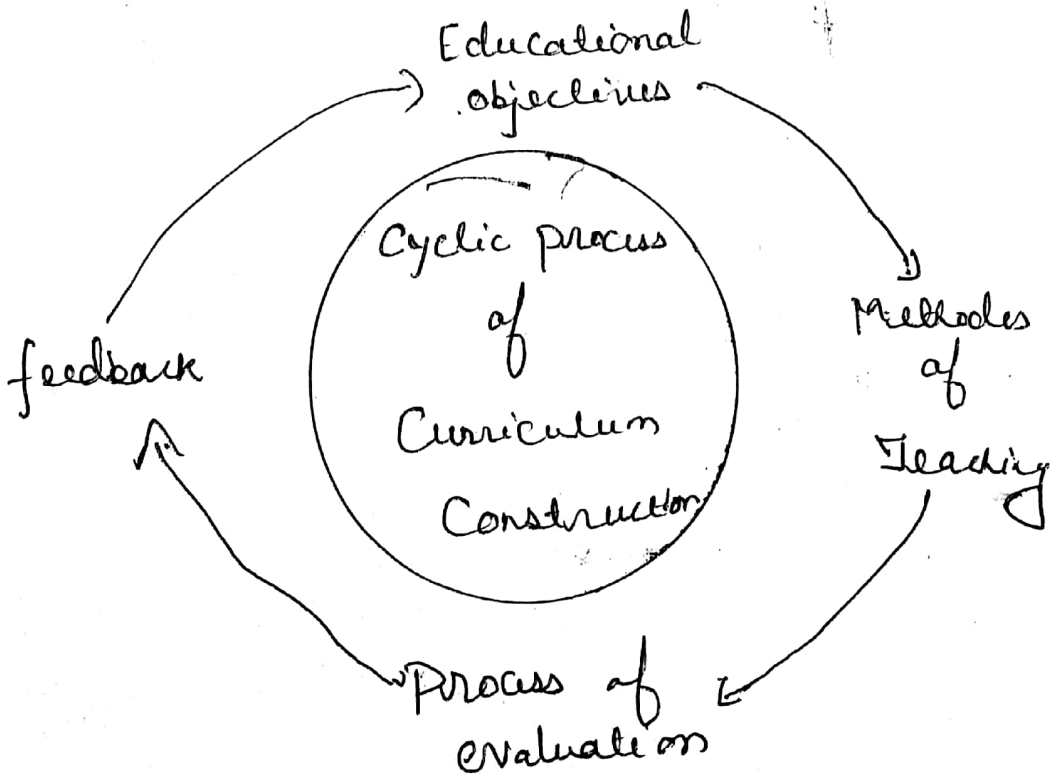

Scanned by CamScanner

पाठ्यक्रम निर्माण की यह प्रक्रिया सतत चलती रहती है। इसके चार तत्व हैं।

1) Educational objectives
शैक्षिक उद्देश्य
2) Methods of Teaching
शिक्षण विधियां
3) Process of Evaluation
मूल्यांकन की प्रक्रिया
4) feedback
पृष्ठपोषण

1) शैक्षिक उद्देश्य (Educational objectives.) →
शिक्षा के कुछ निश्चित शिक्षण उद्देश्य होते हैं। इन उद्देश्यों को शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार जब पाठ्यक्रम का विकास किया जाता है, तो उस समय पाठ्यक्रम में उन सभी अधिगम अनुभवों, कौशलों व क्रियाओं को भी सम्मिलित किया जाता है जो उन उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करते हैं। शिक्षण उद्देश्यों को 3 वर्गों में बांटा जाता है

1) ज्ञानात्मक (Cognitive)
2) भावात्मक (Affective)
3) क्रियात्मक (Psychomotor)

Scanned by CamScanner

इन उद्देश्यो को क्रिया सूचक शब्दों के साथ व्यवहार परक रूप मे लिखा जाता है ताकि इन उद्देश्यो का मूल्यांकन किया जा सके।

2) शिक्षण विधि (Methods of teaching)

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण उद्देश्यो को प्राप्त करने मे शिक्षण विधि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिनके माध्यम से शिक्षक किसी विशिष्ट विषय वस्तु को जब पढ़ाता है तो शिक्षक के द्वारा छात्र विविध प्रकार की क्रियाएं व अधिगम अनुभवों को सीखते हैं। छात्रो का व्यवहार मे अपेक्षित परिवर्तन लाने के लिए व्यक्तिगत भिन्नता के अनुसार उपयुक्त शिक्षण विधि का चयन किया जाता है।

3) मूल्यांकन प्रक्रिया (Process of evaluation)

मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से यह जांच की जाती है कि शिक्षण उद्देश्यो की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है? अथवा नही हुई है। यह शिक्षण विधियो की प्रभावशीलता का पता लगाने मे भी सहायता करता है कि शिक्षण उद्देश्यो की प्राप्ति कहां तक हुई है? जब उन उद्देश्यों को व्यवहारपरक रूप (Behavioral terms)

Scanned by CamScanner

में लिखा जाता है तो मूल्यांकन करना अत्यंत आसान और प्रभावी हो जाता है।

4) पृष्ठपोषण (feedback) ⇒

जब मूल्यांकन कार्य समाप्त हो जाता है तो परिणामों का विश्लेषण करना आवश्यक होता है। पृष्टपोषण द्वारा उद्देश्यों व शिक्षण विधियों को परिवर्तित करने, व संशोधित करने में सहायता मिलती है ताकि शिक्षण कार्य प्रभावशाली बन सके व छात्रों की स्थिति में वांछनीय सुधार किया जा सके।

—X—

Scanned by CamScanner